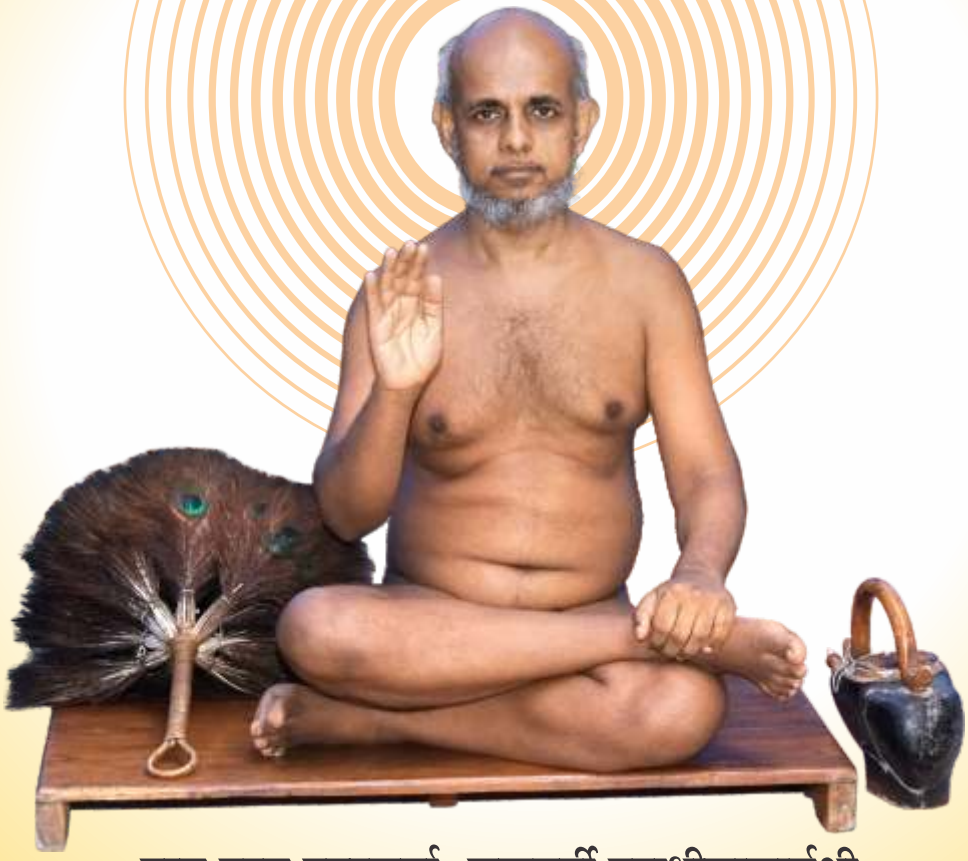

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणा:–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

पाइय सिक्खा = ०२

लेखक

परम पूज्य मुनिश्री प्रणम्यसागर जी महाराज

प्रकाशक

आचार्य अकलंकदेव जैनविद्या शोधालय समिति

उज्जैन (मध्यप्रदेश)

(परम्परानायक)

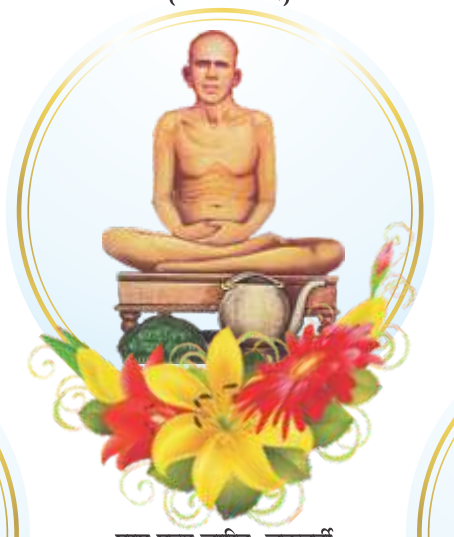

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्रायः होता है। फलतः उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तृत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

प्राकृत पाठ्यक्रम के अंतर्गत

पाइय सिक्खा

(प्राकृत शिक्षा)

भाग-2

लेखकः-

मुनि श्री 108 प्रणम्यसागर जी महाराज

जय जिणिंद

प्रकाशक

आचार्य अकलंक देव जैन विद्या शोधालय समिति

109, शिवाजी पार्क, देवास रोड, उज्जैन (476010)

कृति
पाइय सिक्खा - भाग 2
(प्राकृत शिक्षा)

आशीर्वाद
आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज

कृतिकार
मुनि श्री 108 प्रणम्यसागर जी महाराज

संयोजन
डॉ. अजेश जैन शास्त्री, रेवाड़ी

सहयोग
श्री ऋषभ जैन शास्त्री, रेवाड़ी

प्रति : **2000**
संस्करण - द्वितीय

मूल्य : **30/-**

प्राप्ति स्थान :
डॉ. अजेश जैन, रेवाड़ी - 9416426659, 9784601548
शैलेन्द्र शाह, उज्जैन - 09425092483, 09406881001
आर्हत विद्या प्रकाशन, गोटेगांव - 09425837476

प्रकाशक :
आचार्य अकलंक देव जैन विद्या शोधालय समिति
109, शिवाजी पार्क, देवास रोड, उज्जैन (476010)

मुद्रक
आरसी प्रैस, नई दिल्ली - 9871196002

पाइय सिक्खा

भाग 2

विषयानुक्रमणिका

	विषय	पृष्ठ सं.
1.	आत्मकथ्य/पाथेय	4
2.	प्राकृत भाषा का ऐतिहासिक परिचय	5
3.	प्राकृत विद्या पाठ्यक्रम के प्रवेश का आवेदन पत्र	8
4.	मंगलाचरण	9
5.	पागदवण्णमाला (प्राकृत वर्णमाला)	10
6.	पागदवण्णमाला (प्राकृत वर्णमाला) चित्र सहित	11
7.	पागदभासाए संखा (प्राकृत भाषा में संख्या, 1 से 100)	14
8.	इंदिय (इंदिय)	16
9.	परमेट्ठी (परमेष्ठी)	18
10.	चउवीस तित्थयर थुदि (चौबीस तीर्थंकर स्तुति)	20
11.	पागदकहा (प्राकृत कथा)	21
12.	प्राकृत व्याकरण (नियमावली)	23
13.	अभ्यास-1	24
14.	अभ्यास-2	26
15.	अभ्यास-3	28
16.	अभ्यास-4	30
17.	शब्दरूप (संज्ञा एवं सर्वनाम)	32
18.	कर्ता सारिणी (प्रथम, मध्यम एवं उत्तम पुरुष)	33
19.	क्रियापद सारिणी (प्रथम पुरुष)	34
20.	क्रियापद सारिणी (मध्यम पुरुष)	35
21.	क्रियापद सारिणी (उत्तम पुरुष)	36
22.	क्रियापद रूप	40
23.	संज्ञा शब्दज्ञान	41
24.	क्रियापद ज्ञान	41
25.	क्रिया विशेषण	42
26.	सुक्खफलणाम (सूखे फलों के नाम)	43
27.	पुप्फणाम (फूलों के नाम)	44

आत्मकथ्य/पाथेय

जैन परम्परानुसार अवसर्पिणी काल के इस पंचम युग में जहाँ एक ओर भौतिक एवं वैज्ञानिक सम्पन्नता का दिग्दर्शन हो रहा है, वहीं अशान्त एवं आक्रान्त मानव समाज कर्त्तव्यों एवं मूल्यों से विमुख होता जा रहा है। आवश्यकता इस बात की है कि समाज में मूल्यों की स्थापना हो, वैयक्तिक एवं आध्यात्मिक स्तर पर मानवता का विकास हो, अशांत समाज के लिए आर्षपुरुषों की वाणी का सदुपयोग करने का अवसर मिले। आज जिन-शासन में महावीर की देशना फलित हो रही है। उनकी वाणी आगम के रूप में विद्यमान है। हम सभी उस आगम रूप जिनवाणी का स्वाध्याय करके आत्मकल्याण कर सकें, यही मंगल कामना है।

आज महावीर की देशना जिन आगम ग्रन्थों के रूप में प्राप्त हो रही है उनका स्वाध्याय एवं अध्ययन भाषा की दुरूहता के कारण सम्भव नहीं है। प्राकृत भाषा में रचित इन आगमों के अध्ययन एवं स्वाध्याय के लिए प्राकृत भाषा की प्रारम्भिक जानकारी आवश्यक है। इसी उद्देश्य को लेकर **प्राकृत विद्या पाठ्यक्रम** का निर्माण किया गया है जो **प्राकृत शिक्षा के चार भागों** में पाठकों के हाथ में है। जिसके माध्यम से जनसामान्य एवं जिन-उपासकों के अन्दर भाषा की जानकारी के साथ-साथ स्वाध्याय की प्रवृत्ति बढ़ सकेगी। इसी उद्देश्य को लेकर सामाजिक स्तर पर, पारिवारिक स्तर पर और वैयक्तिक स्तर पर स्वाध्याय की रुचि जागृति की जा सके, जगह-जगह **प्राकृत विद्या पाठशाला** स्थापित की जा रही हैं। इस पाठशाला के निमित्त से प्राकृत भाषा की जानकारी के लिए रचित इस कृति में क्रमशः प्राकृत के संज्ञा-सर्वनाम शब्दों के विभक्ति रूप, क्रियापदों के धातुरूपों और प्राकृत के सामान्य नियमों की जानकारी तथा प्राकृत अभ्यास रचना के प्रयोग 'प्राकृत शिक्षा' में दिये गये हैं।

मंगल-कामना है कि समाज के सभी धर्मानुरागी श्रावक-श्राविकाएं इस पाठशाला में आकर इसे समृद्ध करें और अपने आपको स्वाध्याय की प्रवृत्ति से जोड़े रखें।

अस्तु मंगलभावना सहित.....

वर्षायोग - 2017
रेवाड़ी (हरियाणा)

- मुनि प्रणम्य सागर

प्राकृत भाषा का ऐतिहासिक परिचय

- ❖ भारत के प्राचीन ग्रन्थ प्राकृत भाषा में निबद्ध हैं। श्रमण परम्परा के पोषक वैदिक युगीन व्रात्य आदि प्राचीन प्राकृत का व्यवहार करते थे।
- ❖ वेद छान्दस् में लिखे गये हैं। उस समय जन सामान्य के बीच व्यवहार की भाषा का नाम प्राकृत कहा जाता था।
- ❖ श्रमण परम्परा के महापुरुष भगवान् महावीर ने भी अपने उपदेशों की भाषा जन–बोली प्राकृत को बनाया।
- ❖ गणधर और आचार्यों की परम्परा द्वारा स्मरण के आधार पर महावीर के उपदेशों को द्वादशांग श्रुत के रूप में प्राकृत में सुरक्षित रखा गया।
- ❖ उसी श्रुतांश को दक्षिण भारत के दिगम्बर जैनाचार्यों ने स्वतन्त्र ग्रन्थों की रचना कर और उसे ईसा की प्रथम शताब्दी में लिपिबद्ध कर सुरक्षित किया। दिगम्बर परम्परा के अनुसार ई.पू. प्रथम शताब्दी में गुणधराचार्य ने कसायपाहुड नामक ग्रन्थ की रचना शौरसैनी प्राकृत में 180 गाथा सूत्रों में की।
- ❖ आचार्य धरसेन की प्रेरणा से आचार्य पुष्पदन्त एवं मुनि श्री भूतबलि (ईसा के 73 से 87 वर्ष के लगभग) ने षट्खण्डागम नामक ग्रन्थ की शौरसैनी प्राकृत में रचना की और ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी (श्रुत पंचमी) को उसकी लिखित ताड़पत्रीय प्रति की संघ ने पूजा की। ग्रन्थलेखन का यह क्रम निरन्तर चलता रहा।
- ❖ यही शौरसैनी प्राकृत तब दक्षिण से उत्तर और पूर्व से पश्चिम तक सम्पर्क भाषा प्राकृत के रूप में प्रसिद्ध थी।
- ❖ श्वेताम्बर परम्परा में आगम साहित्य में अर्धमागधी प्राकृत का तथा परवर्ती धार्मिक कथा–ग्रन्थों और व्याख्या साहित्य के लिए महाराष्ट्री प्राकृत का प्रयोग किया गया है।
- ❖ दिगम्बर परम्परा ने धार्मिक कथा और काव्य ग्रन्थों के लिए प्राकृत से विकसित अपभ्रंश भाषा का प्रयोग किया।
- ❖ इस प्रकार भगवान् महावीर के बाद लगभग दो हजार वर्षों तक जैन ग्रन्थों के साथ शौरसैनी, अर्धमागधी, महाराष्ट्री आदि प्राकृतों का सम्बन्ध बना रहा है। प्राकृत जैन परम्परा की मूल भाषा है।
- ❖ जैनाचार्यों ने प्राकृत भाषा के साथ भारत की अन्य प्रायः सभी भाषाओं में अपना साहित्य लिखा है।
- ❖ प्राकृत शब्द की व्युत्पत्ति करते समय **'प्रकृत्या स्वभावेन सिद्धं प्राकृतम्'** अथवा **'प्रकृतीनां साधारणजनानामिदं प्राकृतम्'** अर्थ को स्वीकार करना चाहिये। जन सामान्य की स्वाभाविक भाषा प्राकृत है।
- ❖ प्राचीन विद्वान् नमिसाधु के अनुसार प्राकृत शब्द का अर्थ है–व्याकरण आदि संस्कारों से रहित लोगों का स्वाभाविक वचन–व्यापार। उससे उत्पन्न अथवा वही वचन–व्यापार प्राकृत है।
- ❖ प्राक्+कृत पद से प्राकृत शब्द बना है, जिसका अर्थ है पहिले किया गया। जैन धर्म के द्वादशांग ग्रन्थ पहिले किये गये हैं। अतः उनकी भाषा प्राकृत है, जो बालक, महिला आदि सभी को सुबोध है।

❖ प्राकृत के देश–भेद एवं संस्कारित होने के अवान्तर विभेद हुए हैं। यथा–शौरसेनी, अर्धमागधी, महाराष्ट्री, मागधी, अपभ्रंश आदि।

❖ आठवीं शताब्दी के कवि वाक्पतिराज ने कहा है कि–सभी भाषाएँ इसी (जनबोली प्राकृत) से निकलती हैं और इसी को प्राप्त होती हैं। जैसे जल बादल के रूप में समुद्र से निकलता है और समुद्र में ही नदियों के रूप में आ जाता है। यथा–

सयलाओ इमं वाया बिसन्ति एत्तो य णेन्ति वायाओ।
एन्ति समुद्दं च्चिय णेन्ति सायराओ च्चिय जलाइं।।

❖ महावीर और बुद्ध ने जनता के सांस्कृतिक उत्थान के लिए प्राकृत भाषा का आश्रय लिया, जिसके परिणाम स्वरूप दार्शनिक, आध्यात्मिक, सामाजिक आदि विविधताओं से परिपूर्ण आगमिक एवं त्रिपिटक साहित्य के निर्माण की प्रेरणा मिली।

❖ महापुरुषों ने प्राकृत भाषा के माध्यम से तत्कालीन समाज के विभिन्न क्षेत्रों में क्रान्ति की ध्वजा लहरायी थी। प्राचीन भारत में प्राकृत मातृभाषा के रूप में दूर–दूर के विशाल जन समुदाय को आकर्षित करती थी।

❖ विद्वानों ने कहा है कि जिस प्रकार वैदिक भाषा को आर्य संस्कृति की भाषा होने का गौरव प्राप्त है, उसी प्रकार प्राकृत भाषा को **आगम भाषा/आर्य भाषा** होने की प्रतिष्ठा प्राप्त है।

❖ सम्राट अशोक के समय में प्राकृत जन–भाषा के रूप में इतनी प्रतिष्ठित थी कि उसे **राज्यभाषा** होने का गौरव भी प्राप्त हुआ है। ई.पू. 300 से लेकर 400 ईस्वी तक इन सात सौ वर्षों में लगभग दो हजार अभिलेख प्राकृत में लिखे गये हैं।

❖ खारबेल द्वारा हाथी गुम्फा में प्राकृत एवं ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण शिलालेख में अपने देश भारत वर्ष का नाम **'भरध-वस'** सर्वप्रथम प्राचीनतम उल्लेख के रूप में मिलता है।

❖ वैदिक युग में प्राकृत भाषा **लोकभाषा** थी। उसमें रूपों की बहुलता एवं सरलीकरण की प्रवृत्ति थी। महावीर युग तक आते–आते प्राकृत ने अपने को इतना समृद्ध और सहज किया कि वह अध्यात्म और सदाचार की भाषा बन सकी।

❖ साहित्य भाषा के रूप में महाकवि हाल ने प्रथम सदी में प्राकृत भाषा के कवियों की गाथाओं का गाथाकोश (गाथासप्तशती) तैयार किया, जो ग्रामीण जीवन और सौन्दर्य–चेतना की प्रतिनिधि ग्रन्थ है।

❖ प्राकृत भाषा के इस जनाकर्षण के कारण कालिदास आदि महाकवियों ने अपने नाटक ग्रन्थों में प्राकृत भाषा बोलने वाले पात्रों को प्रमुख स्थान दिया। इससे स्पष्ट है कि समाज में अधिकांश लोग दैनिक जीवन में प्राकृत भाषा का प्रयोग करते थे।

❖ अभिज्ञानशाकुन्तलं की ऋषिकन्या शकुन्तला, नाटककार भास की राजकुमारी वासवदत्ता, शूद्रक की नगरवधू वसन्तसेना तथा प्रायः सभी नाटकों में राजा के मित्र, कर्मचारी आदि पात्र प्राकृत भाषा का प्रयोग करते देखे जाते हैं। इससे स्पष्ट है कि प्राकृत जनसमुदाय की भाषा के रूप में प्रतिष्ठित थी।

❖ नाटकों में स्त्रियाँ शौरसैनी प्राकृत में ही बात करती हैं। महाकवि शूद्रककृत 'मृच्छकटिकम्' नाटक में विदूषक कहता है– दो वस्तुयें हास्य उत्पन्न करती हैं। प्रथम वस्तु–स्त्री के द्वारा संस्कृत भाषा का प्रयोग तथा दूसरी वस्तु–पुरुष द्वारा धीमें स्वर में गायन।

- ❖ प्राकृत में जो आगम ग्रन्थ, व्याख्या साहित्य, कथा एवं चरितग्रन्थ आदि लिखे गये है उनमें काव्यात्मक सौन्दर्य और मधुर रसात्मकता का समावेश है।
- ❖ काव्य की प्रायः सभी विधाओं–महाकाव्य, खण्डकाव्य, मुक्तककाव्य, चरित, कथा आदि को प्राकृत भाषा ने समृद्ध किया है।
- ❖ अनेक प्राकृत रचनाएँ अजैन कवियों/विद्वानों द्वारा लिखी गयी हैं।
- ❖ प्राकृत एवं अपभ्रंश की लाखों पाण्डुलिपियाँ देश के ग्रन्थभण्डारों में सुरक्षित हैं, जो देश की धरोहर हैं।
- ❖ प्राकृत भाषा की मधुरता और काव्यात्मकता का प्रभाव है कि भारतीय काव्यशास्त्रियों ने काव्य के अपने लक्षण–ग्रन्थों में प्राकृत की सैंकड़ों गाथाओं के उद्धरण दिये हैं। देश के अनेक सुभाषितों को उन्होंने इस बहाने सुरक्षित किया है।
- ❖ डॉ. पी. डी. गुणे ने स्वीकार किया है कि प्राकृतों का अस्तित्व वैदिक बोलियों के साथ–साथ विद्यमान था। उन्हीं से परावर्ती साहित्यिक भाषाओं का विकास हुआ है।
- ❖ डॉ. हरदेव बाहरी ने अपनी पुस्तक– **'प्राकृत भाषा और उसका साहित्य'** में कहा है कि वेद कालीन प्राकृतों से संस्कृत और विभिन्न प्राकृतों का विकास हुआ है।
- ❖ डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने तृतीय युगीन प्राकृत अपभ्रंश को प्राचीन हिन्दी कहा है। यह अपभ्रंश आधुनिक भाषाओं को जोड़ने वाली कड़ी है।
- ❖ 'हिन्दी' जिस भाषा के विशिष्ट दैशिक और कालिक रूप का नाम है, भारत में इसका प्राचीनतम रूप प्राकृत है।
- ❖ आधुनिक युग में प्राकृत भाषाओं का व्याकरण लिखने वाले जर्मन विद्वान् हैं– डॉ. पिशेल, इससे जर्मनी में प्राकृत अध्ययन खूब विकसित हुआ।
- ❖ प्राकृत कवि के ये उद्‌गार प्रेरणादायक हैं कि–"प्राकृत काव्य के लिये नमस्कार है और उनके लिए भी जिनके द्वारा प्राकृत काव्य रचा गया है। उनको भी हम नमस्कार करते हैं, जो प्राकृत काव्य को पढ़कर उसे हृदयंगम करते हैं"। यथा–

पाइयकव्वस्स नमो, पाइयकव्वं च निम्मियं जेण।
ताहं चिय पणमामो, पढिऊण य जे वि याणन्ति।।

- ❖ आचार्य राजशेखर ने कर्पूरमंजरी को शौरसैनी प्राकृत में लिखा और उसमें कहा है कि संस्कृत के काव्य पुरुषों की तरह कठोर एवं प्राकृत के काव्य महिलाओं की तरह कोमल भाषा वाले हैं।
- ❖ प्राकृत भाषा का अध्ययन न केवल भारत देश में अपितु विदेशों में भी हो रहा है। आज भी SOAS लंदन यूनिवर्सिटी में प्राकृत भाषा का अध्ययन कराया जाता है।
- ❖ **ऐसी भारतीय भाषाओं की आधारभूत जन भाषा प्राकृत एवं उसके साहित्य के संरक्षण, शिक्षण, शोध एवं प्रचार–प्रसार के लिए प्रत्येक देशवासी, संस्था, सरकार, नेता, समाजसेवी, शिक्षक को सक्रिय सहयोग एवं संबल प्रदान करना चाहिये।**

प्राकृत जैन विद्या पाठशाला समिति (रजि.), रेवाड़ी (हरियाणा)
1008 श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, नसियां जी मन्दिर, निकट जैन हाई स्कूल,
सरकुलर रोड, रेवाड़ी (हरियाणा)
मोबाइल : - 9416426659, 9784601548, 9729312152
Website : www.prakritvidya.com
E-mail : prakratvidyapathshala@gmail.com

प्राकृत विद्या पाठ्यक्रम

फोटो

शाखा.....

-: प्रवेश-आवेदन पत्र :-

1.	आवेदन कर्ता	:	.....
2.	पिता/पति का नाम	:	.....
3.	जन्म-तिथि एवं स्थान	:	.....
4.	लौकिक शिक्षा (प्रमाण पत्र संलग्न करें)	:	.....
5.	धार्मिक शिक्षा	:	.....
6.	पत्राचार का पता	:	.....
7.	स्थाई पता	:	.....
	(मो.नं. एवं ई-मेल सहित)	:	.....
		:	.....

विशेष सूचना : यदि आप सामाजिक या विद्यालय स्तर पर मन्दिर या विद्यालय में **''प्राकृत विद्या''** बच्चों, महिलाओं, पुरुषों को पढ़ाने के इच्छुक हैं तो **''प्राकृत विद्या पाठशाला''** के माध्यम से आप **प्राकृत जैन विद्या पाठशाला समिति (रजि.), रेवाड़ी (हरियाणा)** के सहयोग से सुचारू रूप से चला सकते हैं।

प्राकृत विद्या पाठ्यक्रम के प्रवेश एवं प्रक्रिया की अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :-

डॉ० अजेश जैन शास्त्री
रेवाड़ी (हरियाणा)
मो. नं. 9784601548

ऋषभ जैन शास्त्री
गांधी नगर, रेवाड़ी
मो. नं. 9996266400

श्रीमती नेहा जैन
बल्लूवाड़ा, रेवाड़ी
मो. नं. 9729312152

मंगलाचरण

णमो अरहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं

चत्तारि मंगलं अरहंत मंगलं
सिद्ध मंगलं साहू मंगलं
केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं ।।
चत्तारि लोगुत्तमा अरहंत लोगुत्तमा
सिद्ध लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा
केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा ।।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि
अरहंत सरणं पव्वज्जामि
सिद्ध सरणं पव्वज्जामि
साहू सरणं पव्वज्जामि
केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि ।।

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होइ मंगलं।।

पाठ-1

पागदवण्णमाला (प्राकृत वर्णमाला)

सर-वेंजण (स्वर-व्यंजन)

वण्ण (वर्ण) - वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई हैं। वर्ण को ही अक्षर कहा जाता है।

वण्णमाला (वर्णमाला) - वर्णों के समूह को वर्णमाला कहते हैं।

वण्ण (वर्ण)

- सर वण्ण (स्वर वर्ण)
- वेंजण वण्ण (व्यंजन वर्ण)

स्वर वर्ण - वे वर्ण जिनका उच्चारण करने में दूसरे वर्णों की सहायता नहीं लेनी पड़ती उन्हें स्वर वर्ण कहते हैं। प्राकृत में कुल 10 स्वर होते हैं।

10 सरवण्ण (स्वर वर्ण)

- हस्स सर (हस्स स्वर)-5
  - अ, इ, उ, ए, ओ
- दिघ्घ सर (दीर्घ स्वर) - 5
  - आ, ई, ऊ, ए, ओ

प्राकृत भाषा में ऐ तथा औ स्वर भी ए तथा ओ के रूप में ही प्रयोग किए जाते हैं।

व्यंजन वर्ण - व्यंजन वर्णों का उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है। प्राकृत में व्यंजनों की संख्या 29 है-

वेंजण (व्यंजन)

- वर्गीय व्यंजन-23 (स्पर्श व्यंजन)
  - कवर्ग - क, ख, ग, घ
  - चवर्ग - च, छ, ज, झ
  - टवर्ग - ट, ठ, ड, ढ, ण
  - तवर्ग - त, थ, द, ध, न
  - पवर्ग - प, फ, ब, भ, म
- अवर्गीय व्यंजन-6
  - अन्तस्थ व्यंजन-4
    - य, र, ल, व
  - उष्माक्षर-2
    - स, ह

पागदवण्णमाला (प्राकृत वर्णमाला)

(अ से ह तक)

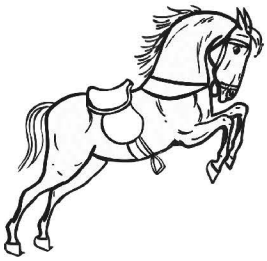

अ - अस्स (घोड़ा)

उ - उदहि (सागर)

क - कुक्कुर (कुत्ता)

आ - आगम (शास्त्र)

ऊ - ऊण (ऊन)

ख - खीर (दूध)

इ - इत्थी (स्त्री)

ए - एणग (चश्मा)

ग - गुहा (गुफा)

ई - ईख (गन्ना)

ओं

ओ - ओं (ओम्)

घ - घर (घर)

च - चमू (सेना)

पागदवण्णमाला (प्राकृत वर्णमाला)

छ - छत्त (छात्र)

ठ - ठक्कुर (मूर्ति)

त - तरू (वृक्ष)

ज-जंबू (जामुन का पेड़)

ड-डिंभ (छोटा बच्चा)

थ-थुदि (स्तुति/प्रार्थना)

झ -झुंपड़ा (झौंपड़ी)

ढ-ढक्का (बड़ा ढोल)

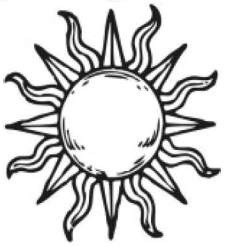

द-दिवायर (सूर्य)

ट - टंक (कुल्हाड़ी)

ण - णर (मनुष्य)

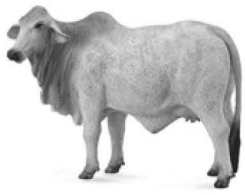

ध-धेणु (गाय)

पागदवण्णमाला (प्राकृत वर्णमाला)

न - नई (नदी)

भ - भमर (भँवरा)

ल - लवण (नमक)

प - पुप्फ (फूल)

म - महिस (भैंसा)

व - वाणर (बंदर)

फ - फल (फल)

य-यमराज (काल,मृत्यु)

स - सप्प (साँप)

ब - बाला (लड़की)

र - रयण (रत्न)

ह - हत्थि (हाथी)

पाठ - 2

पागदभासाए संखा

(प्राकृत भाषा में संख्या, 1 से 100)

1.	एक्क, इक्क, एग, एअ	एक	१	26.	छब्बीस	छब्बीस	२६
2.	दो, दुवे, वे	दो	२	27.	सत्तवीस, सत्तावीस	सत्ताईस	२७
3.	ति, तिण्णि	तीन	३	28.	अट्ठावीस	अट्ठाईस	२८
4.	चउ, चउरो, चत्तारि	चार	४	29.	एगूणतीस	उनतीस	२९
5.	पंच	पाँच	५	30.	तीस	तीस	३०
6.	छट्ठ	छः	६	31.	एक्कतीस	इकत्तीस	३१
7.	सत्त	सात	७	32.	बत्तीस	बत्तीस	३२
8.	अट्ठ	आठ	८	33.	तेत्तीस	तैंतीस	३३
9.	णव	नौ	९	34.	चउतीस	चौंतीस	३४
10.	दह, दस	दस	१०	35.	पण्णतीस, पणतीस	पैंतीस	३५
11.	एक्कारह, एगारस	ग्यारह	११	36.	छत्तीस	छत्तीस	३६
12.	बारह, बारस	बारह	१२	37.	सत्ततीस	सैंतीस	३७
13.	तेरह, तेरस	तेरह	१३	38.	अट्ठतीस	अड़तीस	३८
14.	चउद्दह, चउद्दस, चोद्दस	चौदह	१४	39.	एगूणचत्तालीस	उनतालीस	३९
15.	पण्णरह, पण्णरस	पन्द्रह	१५	40.	चत्तालीस, चालीस	चालीस	४०
16.	सोलह, सोलस	सोलह	१६	41.	एक्कचत्तालीस	इकतालीस	४१
17.	सत्तरह, सत्तरस	सत्तरह	१७	42.	बायालीस	बयालीस	४२
18.	अट्ठारह, अट्ठारस,	अठारह	१८	43.	तेआलीस	तैंतालीस	४३
19.	एगूणवीस, अउणवीस,	उन्नीस	१९	44.	चउआलीस	चौंवालीस	४४
20.	वीस	बीस	२०	45.	पणयालीस	पैंतालीस	४५
21.	एगवीस	इक्कीस	२१	46.	छयालीस	छियालीस	४६
22.	बावीस, बाइस	बाइस	२२	47.	सत्तचत्तालीस	सैंतालीस	४७
23.	तेवीस	तेईस	२३	48.	अट्ठचत्तालीस	अड़तालीस	४८
24.	चउवीस	चौबीस	२४	49.	एगूणपण्णास	उनचास	४९
25.	पण्णवीस, पणुवीस	पच्चीस	२५	50.	पण्णास	पचास	५०

पागदभासाए संखा
(प्राकृत भाषा में संख्या, 1 से 100)

51.	एगपण्णास,एगावण्ण	इक्यावन	५१
52.	बावण्ण	बावन	५२
53.	तेवण्ण	तिरेपन	५३
54.	चउवण्ण, चउपण्ण	चौवन	५४
55.	पणपण्ण, पणवण्ण	पचपन	५५
56.	छप्पण्ण	छप्पन	५६
57.	सत्तावण्ण	सत्तावन	५७
58.	अट्ठावण्ण	अट्ठावन	५८
59.	एगूणसट्ठि	उनसठ	५९
60.	सट्ठि	साठ	६०
61.	एगसट्ठि	इकसठ	६१
62.	बासट्ठि	बासठ	६२
63.	तेसट्ठि	तिरेसठ	६३
64.	चउसट्ठि	चौंसठ	६४
65.	पंचसट्ठि , पणसट्ठि	पैंसठ	६५
66.	छसट्ठि	छियासठ	६६
67.	सत्तसट्ठि	सड़सठ	६७
68.	अट्ठसट्ठि	अड़सठ	६८
69.	एगूणसत्तरि	उनहत्तर	६९
70.	सत्तरि	सत्तर	७०
71.	एगसत्तरि	इकहत्तर	७१
72.	बाहत्तरि	बहत्तर	७२
73.	तेहत्तरि	तेहत्तर	७३
74.	चउहत्तरि	चौहत्तर	७४
75.	पंचहत्तरि	पचहत्तर	७५
76.	छहत्तरि	छिहत्तर	७६
77.	सत्तहत्तरि	सतहत्तर	७७
78.	अट्ठहत्तरि	अठहत्तर	७८
79.	एगूणसीइ	उनासी	७९
80.	असीइ	अस्सी	८०
81.	एगासीइ	इक्कासी	८१
82.	बासी	बयासी	८२
83.	तेसीइ	तिरासी	८३
84.	चउरासी	चौरासी	८४
85.	पणसीइ	पचासी	८५
86.	छासीइ	छियासी	८६
87.	सत्तासीइ	सत्तासी	८७
88.	अट्ठासीइ, अट्ठासी	अठासी	८८
89.	एगूणणवइ	नवासी	८९
90.	णवइ	नब्बे	९०
91.	एक्काणवइ	इक्यानवे	९१
92.	बाणुवइ	बानवे	९२
93.	तेणवइ	तिरानवे	९३
94.	चउणवइ	चौरानवे	९४
95.	पंचणवइ	पंचानवे	९५
96.	छण्णवइ	छियानवे	९६
97.	सत्ताणवइ	सत्तानवे	९७
98.	अट्ठाणवइ	अट्ठानवे	९८
99.	णवणवइ	निन्यानवे	९९
100.	सय	सौ	१००

पाठ-3

इंदिय (इन्द्रिय)

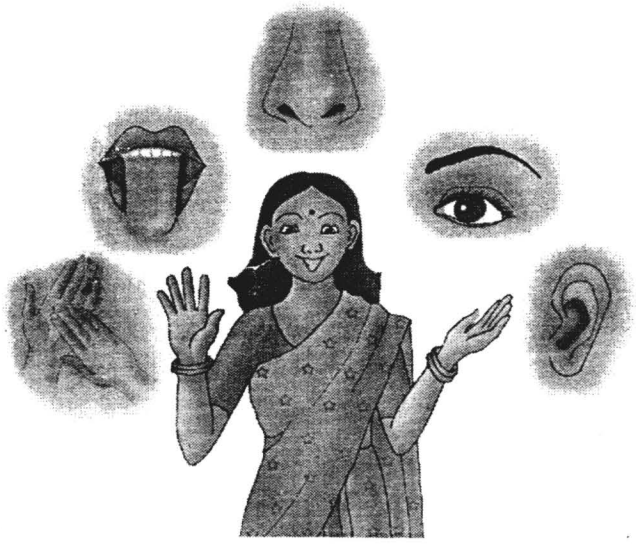

पण्ह – **किं णाम इंदियाणि अत्थि?**

प्रश्न – इंद्रिय किसे कहते हैं?

उत्तर – **अप्पणो चिण्हं इंदियं अत्थि।**

उत्तर – आत्मा का चिह्न इंद्रिय है।

पण्ह – **इंदियाणि केत्तियाणि होंति?**

प्रश्न – इंद्रियाँ कितनी होती हैं?

उत्तर – **इंदियाणि पंच होंति।**

उत्तर – इंद्रियाँ पाँच होती हैं।

पण्ह – **तेसिं णामाइं किं सन्ति?**

प्रश्न – उनके नाम क्या हैं?

पण्ह– फासइंदिय, रसणाइंदिय, घाणइंदिय, चक्खुइंदिय, कण्णइंदिय।

उत्तर– स्पर्शन इन्द्रिय, रसना इन्द्रिय, घ्राण इन्द्रिय, चक्षु इन्द्रिय, कर्ण इन्द्रिय।

पण्ह– किं णाम फासिंदियं होदि?

प्रश्न– स्पर्शन इन्द्रिय किसे कहते हैं?

उत्तर– जेण सीदुण्हादिअट्ठविहफासस्स णाणं होदि तं फासिंदियं णाम।

उत्तर– जिसके द्वारा शीत, उष्ण, आदि आठ प्रकार के स्पर्श का ज्ञान होता है, वह स्पर्श इन्द्रिय है।

पण्ह– किं णाम रसणेंदियं होदि?

प्रश्न– रसना इन्द्रिय किसे कहते हैं?

उत्तर– जेण मिट्ठादि पंचविहरसस्स णाणं होदि तं रसणेदिंयं णाम।

उत्तर– जिसके द्वारा मीठा आदि पाँच प्रकार के रस का ज्ञान होता है, वह रसना इन्द्रिय है।

पण्ह– किं णाम घाणिंदियं होदि?

प्रश्न– घ्राण इन्द्रिय किसे कहते हैं?

उत्तर– जेण सुगंधदुग्गंधाणं णाणं होदि तं घाणिंदियं णाम।

उत्तर– जिसके द्वारा सुगन्ध, दुर्गन्ध का ज्ञान होता है वह घ्राण इन्द्रिय है।

पण्ह– किं णाम चक्खुइंदियं होदि?

प्रश्न– चक्षु इन्द्रिय किसे कहते हैं?

उत्तर– जेण किण्हादिपंचविहवण्णस्स णाणं होदि तं चक्खुइंदियं णाम।

उत्तर– जिसके द्वारा काले आदि पंच प्रकार के रंग का ज्ञान होता है वह चक्षु इन्द्रिय है।

पण्ह– किं णाम कण्णइंदियं होदि?

प्रश्न– कर्ण इन्द्रिय किसे कहते हैं?

उत्तर– जेण सद्दस्स झुणिस्स वा णाणं होदि तं कण्णइंदियं णाम।

उत्तर– जिसके द्वारा शब्द अथवा ध्वनि का ज्ञान होता है वह कर्ण इन्द्रिय है।

पाठ-4

परमेट्ठी (परमेष्ठी)

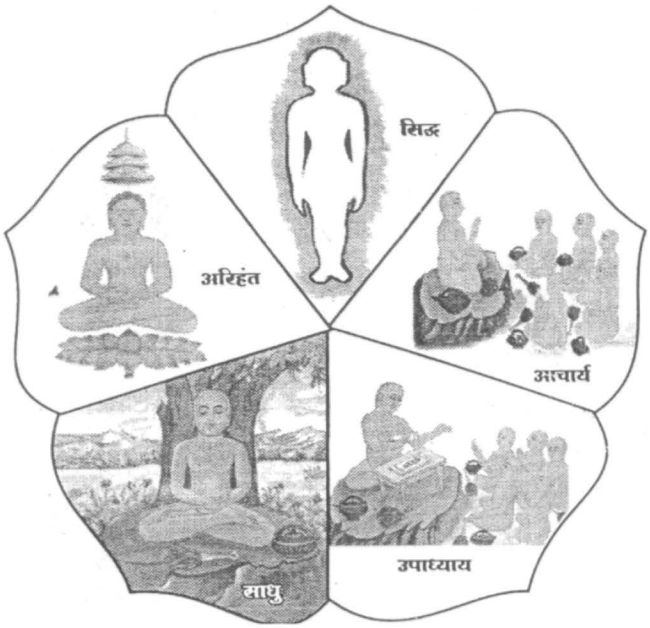

पण्ह– **किं णाम परमेट्ठी होदि?**

प्रश्न– परमेष्ठी किसे कहते हैं?

उत्तर– **जे परमे पदे चिट्ठंति ते परमेट्ठिणो होंति।**

उत्तर– जो परमपद में स्थित हैं वे परमेष्ठी हैं।

पण्ह– **परमेट्ठिणो केत्तियाणि होंति?**

प्रश्न– परमेष्ठी कितने होते हैं?

उत्तर– **परमेट्ठिणो पंच होंति।**

उत्तर– परमेष्ठी पाँच होते हैं।।

पण्ह– **तेसिं णामाइं किं सन्ति?**

प्रश्न– उनके नाम क्या हैं?

उत्तर– **अरिहंत, सिद्ध, आइरिय, उवज्झाय, साहू।**

उत्तर– अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधू।

पण्ह– किं णाम अरिहंतो होदि?

प्रश्न– अरिहंत किसे कहते हैं

उत्तर– जेहिं चदुघाइकम्माणि विणट्ठाणि तह अणंतचउट्ठयं पत्तं ते अरिहंता होंति। तेसिं मूलगुणा छायालीस होंति।

उत्तर– जिन्होंने चार घातिया कर्मों का नाश किया है तथा अनंतचतुष्टय प्राप्त किए हैं वह अरिहंत हैं। उनके छ्यालीस मूलगुण होते हैं।

पण्ह– किं णाम सिद्धो होदि?

प्रश्न– सिद्ध किसे कहते हैं?

उत्तर– जेहिं अट्ठकम्माणं विणासादो अट्ठगुणाणं पत्ती कदा ते सिद्धा होंति। तेसिं मूलगुणा अट्ठ होंति।

उत्तर– जिन्होंने आठ कर्मों के नाश से आठ गुणों की प्राप्ति की है वह सिद्ध हैं। उनके मूलगुण आठ होते हैं।

पण्ह– किं णाम आइरियो होदि?

प्रश्न– आचार्य किसे कहते हैं?

उत्तर– जे पंचाचारं सयं पालंति अण्णं च पालावेंति ते आइरिया होंति। तेसिं मूलगुणा छत्तीस होंति।

उत्तर– जो पंचाचार का पालन स्वयं करते हैं तथा कराते हैं वे आचार्य हैं। उनके मूलगुण छत्तीस होते हैं।

पण्ह– किं णाम उवज्झाओ होदि?

प्रश्न– उपाध्याय किसे कहते हैं?

उत्तर– जे रयणत्तयं आराहंति तहा अज्झावेंति ते उवज्झाया होंति। तेसिं मूलगुणा पणुवीस होंति।

उत्तर– जो रत्नत्रय की आराधना करते हैं तथा अध्यापन कराते हैं वह उपाध्याय हैं। उनके मूलगुण पच्चीस होते हैं।

पण्ह– किं णाम साहू होदि?

प्रश्न– साधु किसे कहते हैं?

उत्तर– जे अप्पाणं साहंति ते साहवो होंति। तेसिं मूलगुणा अट्ठावीस होंति।

उत्तर– जो आत्मा की साधना करते हैं तथा साधू हैं। उनके मूलगुण अट्ठाईस होते हैं।

पाठ-5

चउवीस तित्थयर थुदि

(चौबीस तीर्थंकर स्तुति)

आदीसं वंदे जिणमजियं संभवमभिणंदणसुमइं।
पउमसुपासं चंदं सुविहिं सीयलसेयवासुपुज्जं।।
विमलमणंतं धम्मपवत्तय - धम्मं संतिं तिपयहरं।
कुंथुमरं सिवकंतारमणं मल्लिं कम्मियचुण्णकरं।।
मुणिसुव्वय - णमिणाहजिणेसं जदुकुलतिलयं णेमिजिणं।
पासपहुं भयवं वरवीरं वंदे सव्वं तित्थयरं।।
माणुस - खेत्ते विहरणभूदा सीमंदरजिणभयवंता।
दिंतु समाहिं बोहिसुलाहं रवि-ससि-सहस-पयासंता।।

अन्वयार्थ-(**आदीसं**) आदीश (आदिनाथ) (**जिणं**) जिन की (**अजियं**) अजितनाथ की (**संभवं**) संभवनाथ की (**अभिणंदण सुमइं**) अभिनंदननाथ, सुमतिनाथ की (**पउमसुपासं**) पद्प्रभु, सुपार्श्वनाथ की (**चंदं**) चंदप्रभ की (**सुविहिं**) सुविधिनाथ की (**सीयलसेयवासुपुज्जुं**) शीतल, श्रेयांस, वासुपूज्य भगवान की (**वंदे**) मैं वन्दना करता हूँ (**विमलं**) विमलनाथ की (**अणंतं**) अनंतनाथ की (**धम्मपवत्तयधम्मं**) धर्मप्रवर्तक धर्मनाथ की (**तिपयहरं**) तीन पद धारी (**संतिं**) शांतिनाथ की (**कुंथुं**) कुंथुनाथ की (**सिवकंतारमणं**) शिवसुख रूपी स्त्री से रमण करने वाले (**अरं**) अरनाथ की (**कम्मियचुण्णकरं**) कर्मों को चूर्ण करने वाले (**मल्लिं**) मल्लिनाथ की (**मुणिसुव्वय-णमिणाहजिणेसं**) मुनिसुव्रत, नमिनाथ जिनेश की (**जदुकुलतिलयं णेमिजिणं**) यदुकुल के तिलक नेमिजिन की (**पासपहुं**) पार्श्वप्रभु की (**भयवं**) भगवान (**वरवीरं**) श्रेष्ठ वीरनाथ की (**सव्वं तित्थयरं**) समस्त तीर्थंकर की (**वंदे**) मैं वन्दना करता हूँ। (**माणुसखेत्ते**) मनुष्यक्षेत्र में (**विहरणभूदा**) विहार करने वाले (**सीमंदरजिणभयवंता**) सीमंदर जिन भगवान (**रविससिसहसपयासंता**) हजारों सूर्य, चन्द्रमाओं से प्रकाशमान हैं वे हमें (**बोहिसुलाहं**) बोधि का श्रेष्ठ लाभ तथा (**समाहिं**) समाधि को (**दिंतु**) देवें।

भावार्थ-आदिनाथ जिन की, अजितनाथ की, संभवनाथ की, अभिनंदननाथ, सुमतिनाथ की, पद्मप्रभु, सुपार्श्वनाथ की, चंदप्रभ की, सुविधिनाथ की, शीतल, श्रेयांस, वासुपूज्य भगवान की, विमलनाथ की, अनंतनाथ की, धर्मप्रवर्तक धर्मनाथ की, तीन पद धारी शांतिनाथ, कुंथुंनाथ की, शिवसुख रूपी स्त्री से रमण करने वाले अरनाथ की, कर्मों को चूर्ण करने वाले मल्लिनाथ की, मुनिसुव्रत, नमिनाथ जिनेश की, यदुकुल के तिलक नेमिजिन की, पार्श्वप्रभु की, भगवान श्रेष्ठ वीरनाथ की, समस्त तीर्थंकर की मैं वन्दना करता हूँ। मनुष्यक्षेत्र में विहार करने वाले सीमंदर जिन भगवान हजारों सूर्य, चन्द्रमाओं से प्रकाशमान हैं वे हमें बोधि का श्रेष्ठ लाभ तथा समाधि को देवें।

पाठ-6
पागदकहा (प्राकृत कथा)
1. मूलस्स पत्थरो

लालबहादुरसत्तीणामेण सव्वे परिचिदा संति। सहजो सरलो पसण्णमुहो सेवाभावी सो महंतो पुरिसो अत्थि। तस्स गुणेण अणायासेण लोगा पहाविदा जादा। जदा सो लोगसेवामंडलस्स सदस्सरूवेण अब्भुवगदो तदा सो अहिययरो विणम्मो भूदो। सो कदा वि ण वंछदि जं–मज्झ णामो समायार-पत्तपत्तिगासु पयासिदो हवे जेण लोगेहिं मे पसंसा हवे।

एगदा तस्स मित्तेण पुच्छिदं– भो सत्तीजी! समायारपत्तेसु सगणामपयासणं तुमं किं ण कंखसि? एगक्खणमंतरेण सो कहेदि– लोगसेवामंडलस्स कज्जस्स दिक्खासमारोहे लालालाजपदरायेण कहिदं– लालबहादुर! ताजमहलो दोपयारेहिं पत्थरेहिं णिम्मिदो होदि। एगेहिं दु पयारेहिं पत्थरेहिं उवरि भूभित्तियादियं णिम्मिदं। ते खलु लोगाणं दिट्ठिगोयरा होंति णिच्चं च पसंसिदा होंति। विदियपयारेहिं पत्थरेहिं पुण तस्स मूलभागो णिम्मिदो होदि। जस्सुवरि महापासादो उवट्ठिदो होदि। तेसिं एदाणि वयणाणि मम सदीए सदा चिट्ठंति। अहं खलु मूलभागगदपत्थरोव्व सेवाकरणं अहिलसामि।

कठिन शब्दार्थः सत्ती = शास्त्री, **सव्वे** = सभी, **परिचिदा** = परिचित, **पसण्णमुहो** = प्रसन्नमुख, **महंतो** = महान, **पहाविदा** = प्रभावित, **जादा** = हुए, **जदा** = जब, **अब्भुवगदो** = स्वीकारा गया, **भूदो** = हो गए, **कदा** = कभी, **वि** = भी, **ण** = नहीं, **जं** = कि, **पत्तपत्तिगासु** = पत्र-पत्रिकाओं में, **पयासिदो** = प्रकाशिक, **हवे** = होवे, **पसंसा** = प्रशंसा, **एगदा** = एक बार, **पुच्छिदं** = पूछा, **सगणामपयासणं** = अपने नाम का प्रकाशन, **कंखसि** = चाहते हो, **एगक्खणमंतरेण** = एक क्षण बाद, **कज्जस्स** = कार्य के, **दिक्खा-समारोहे** = दीक्षा समारोह में, **दोपयारेहिं** = दो प्रकार के, **णिम्मिदो** = निर्मित हुआ, **भूभित्तियादियं** = भूमि दीवाल आदि, **दिट्ठिगोयरा** = दृष्टिगोचर, **णिच्चं** = हमेशा, **विदियपयारेहिं** = दूसरे प्रकार के, **पुण** = पुनः, **जस्सुवरि** = जिसके ऊपर, **उवट्ठिदो** = उपस्थित, **सदीए** = स्मृति में, **चिट्ठंति** = रहते हैं, **मूलभागगदपत्थरोव्व** = मूल भाग वाले पत्थर की तरह, **अहिलसामि** = इच्छा करता हूँ।

1. मूल का पत्थर

लाल बहादुर शास्त्री के नाम से सभी परिचित हैं। सहज, सरल, प्रसन्नमुख, सेवाभावी वह महान पुरुष थे। उनके गुण से अनायास लोग प्रभावित हुए। जब वह लोक सेवा मंडल के सदस्य के रूप में स्वीकारे गए तब वह और अधिक विनम्र हो गए। वह कभी भी यह नहीं चाहते थे कि मेरा नाम समाचार पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होवे, जिससे लोगों के द्वारा मेरी प्रशंसा हो।

एक बार उनके मित्र ने पूछा-भो, शास्त्री जी! समाचार पत्रों में अपने नाम प्रकाशन की तुम इच्छा क्यों नहीं करते हो? एक क्षण बाद वह कहते हैं - लोक सेवा मण्डल कार्य के दीक्षा समारोह में लाला लाजपतराय ने कहा था-लालबहादुर! ताजमहल दो प्रकार के पत्थरों से निर्मित हुआ है। एक प्रकार के पत्थरों के द्वारा ऊपर की भूमि (फर्श), दीवाल आदि बनी हुई है। वे पत्थर तो लोगों को दृष्टिगोचर होते हैं और हमेशा प्रशंसित होते हैं। किन्तु दूसरे प्रकार के पत्थरों से उसका मूल भाग (नींव) बना होता है। जिसके ऊपर महाप्रासाद उपस्थित है। उनके ये वचन मेरी स्मृति में सदा रहते हैं। मैं तो मूल भाग वाले पत्थर की तरह सेवा करने की इच्छा करता हूँ।

पण्ह-1 लाल बहादुरसत्ती कथं पुरिसो अत्थि?

उत्तर- लाल बहादुरसत्ती सहजो सरलो पसण्णमुहो सेवाभावी पुरिसो अत्थि?

पण्ह-2 ताजमहलो केत्तियप्पारेहि पत्थरेहिं णिम्मि दो होदि?

उत्तर- ताजमहलो दो पयारेहिं पत्थरेहिं णिम्मिदो होदि।

पण्ह-3 सो (लाल बहादुरसत्ती) कदा वि किं ण वंछदि?

उत्तर- सो कदा वि ण वंछदि जं- मज्झ णामो समायार-पत्तपत्तिगासु पयासिदो हवे जेण लोगेहिं में पसंसा हवे।

पागदकहा (प्राकृत कथा)

2. सामीरामतित्थ

पाठसालाए छत्ताणं वारिसियपरिक्खा पचलिदा। बहुसु छत्तेसु एगो तीरथरामो णाम छत्तोत्थि। सो पाठसालाए णाणग्गहणट्ठ आगदो। रत्तिंदिवं पढणे लग्गो होदि। परिक्खापत्ते तेरसपुच्छासु णवपुच्छाए उत्तरं दादव्वं ति णियमो। सो छत्तो सोचेदि अहं दु सव्व-पुच्छाणं उत्तरं जाणामि। कएणवपुच्छाए उत्तरं **लिहेहं** ति चिंतिय तेण तेरसण्हं पुच्छाणं उत्तरं कमेण **लिहिदं**। अंते पुण **लिहिदं**– केसिं पि णवपण्हाणं उत्तरं पेक्खिय अंकं देहि। परिक्खगो उत्तरं पढिदूण चकिदो जादो। अंकाणं हीणकरणाय अवसरो णत्थि खलु। तीरथरामो पुण्णंकं पाऊण सव्वसेट्ठो छतो मण्णिदो। सो छत्तो खलु अग्गे सामी 'रामतित्थ' इदि णामेण पसिद्धो।

तदो णाणज्जणकाले छत्ताणं अण्णकज्जेसु अवहाणं ण दादव्वं ति।

कठिन शब्दार्थः तित्थ = तीर्थ, **वारिसियपरिक्खा** = वार्षिक परीक्षा, **पचलिदा** = चल रही थी, **णाणग्गहणट्ठ** = ज्ञान ग्रहण करने के लिए, **रत्तिंदिवं** = रात-दिन, **परिक्खापत्ते** = परीक्षा पत्र में, **पुच्छासु** = प्रश्नों में, **दु** = तो, **कएणवपुच्छाए** = कौन से नौ प्रश्नों का, **तेरसण्हं पुच्छाणं** = तेरह प्रश्नों का, **केसिं पि** = किन्हीं भी, **पेक्खिय** = देखकर, **परिक्खगो** = परीक्षक, **पढिदूण** = पढ़कर, **हीणकरणाय** = कम करने का, **पाऊण** = प्राप्त करके, **मण्णिदो** = माना गया, **अग्गे** = आगे, **णाणज्जणकाले** = ज्ञानार्जन के समय में, **अण्णकज्जेसु** = अन्य कार्यों में, **अवहाणं** = ध्यान, **दादव्वं** = देना चाहिए।

2. स्वामी रामतीर्थ

पाठशाला के छात्रों की वार्षिक परीक्षा चल रही थी। बहुत से छात्रों में एक तीरथराम का छात्र था। वह पाठशाला में ज्ञान ग्रहण करने के लिए आया। वह रात दिन पढ़ने लगा। परीक्षा पत्र में नियम था कि तेरह (13) प्रश्नों में से नौ (9) प्रश्नों का उत्तर देना है। वह छात्र विचार करता है कि मैं सभी प्रश्नों के उत्तर जानता हूँ। कौन से नौ प्रश्नों का उत्तर लिखूँ, ऐसा विचार करके उसने तेरह प्रश्नों का उत्तर क्रम से लिख दिया। अंत में फिर लिख दिया कि - किन्हीं भी नौ प्रश्नों का उत्तर देखकर अंक प्रदान कर दें। परीक्षक उत्तर पढ़कर चकित रह गया। अंकों को कम करने का तो कोई कारण ही नहीं है। तीरथराम पूर्णांक को प्राप्त करके सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी माना गया। वही छात्र आगे चल कर 'स्वामी रामतीर्थ' इस नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसलिए ज्ञानार्जन के समय में छात्रों को अन्य कार्यों में ध्यान नहीं देना चाहिए।

पण्ह-1 सो छत्तो अग्गे किं णामेण पसिदो?

उत्तर- सो छत्तो खलु अग्गे सामी 'रामतित्थ' इदि णामेण पसिद्धो।

पण्ह-2 परिक्खापत्ते किं णियमो अत्थि?

उत्तर- परिक्खापत्ते तेरसपुच्छासु णवपुच्छाए उत्तरं दादव्वं ति णियमो।

पण्ह-3 'सामीरामतित्थ' इमाए कहाए का सिक्खा पत्ता?

उत्तर- 'सामीरामतित्थ' इमाए कहाए णाणज्जणकाले छताणं अण्ण कज्जेसु अवहागं णं दादव्वं ति सिक्खा पत्ता।

प्राकृत व्याकरण

नियमावली

नियम 1 - कर्त्ता के अनुसार क्रिया का वचन और पुरुष होता है। जैसे 'सो पढदि' यहाँ कर्त्ता (सो) प्रथम पुरुष एकवचन में है तो क्रिया (पढदि) भी प्रथम पुरुष एकवचन में होगी।

नियम 2 - पुंलिंग, स्त्रीलिंग, नपुंसकलिंग, इन तीनों लिगों के संज्ञा और सर्वनाम शब्दों के साथ क्रियापद का रूप वही रहता है। जैसे -सा पढदि। तं पढदि।

नियम 3 - कर्ता में प्रथमा विभक्ति और कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है।

नियम 4 - प्राकृत में मात्र दो ही वचन होते हैं - एकवचन और बहुवचन।

नियम 5 - वर्तमानकाल की क्रिया में 'है' या 'रहा है' दोनों प्रयोग होते हैं। जैसे-वह जाता है या जा रहा है। दोनों अर्थ में 'गच्छइ' होगा।

विशेष:- शौरेसेनी प्राकृत में अंत 'त' का 'द' हो जाता है तथा महाराष्ट्र प्राकृत में 'इ' हो जाता है।

नियम 6 - तीन पुरुष होते हैं। **(क)** प्रथम (या अन्य) पुरुष अर्थात् वह, वे दोनों, वे सब, किसी व्यक्ति या वस्तु का नाम भी अन्य पुरुष कहा है। **(ख)** - मध्यम पुरुष अर्थात् तू, तुम, तुम दोनों, तुम सब **(ग)** - उत्तम पुरुष अर्थात् मैं, हम दोनों, हम सब। ये नाम स्मरण कर लें।

नियम 7 - कर्ता जिस पुरुष और जिस वचन का होगा, उसी के अनुसार क्रिया और वचन होगा। जैसे तुमं पढसि, यहाँ कर्ता मध्यम पुरुष का एकवचन है तो क्रिया भी उसी अनुसार हुई। तुम्हे पढह इत्यादि।

नियम 8 - प्राकृत में कुल 10 स्वर होते हैं। जिनमें पाँच ह्रस्व स्वर होते हैं और पाँच दीर्घ स्वर होते हैं।

1. ह्रस्व स्वर - अ इ उ ए ओ
2. दीर्घ स्वर - आ ई ऊ ए ओ

इस प्रकार आपने देखा कि ऐ और और स्वर भी ए और ओ के रूप में ही अभिव्यक्त होते हैं।

प्रयोग - बच्चो! देखो बोली भाषा में भी हम लोग सामान्यत: इन स्वरों का प्रयोग नहीं करते हैं। इसलिए प्राकृत पहले बोली भाषा के रूप में प्रचलित थी और यह जन सामान्य की भाषा थी। जैसे- कैलास, ऐरावनत, ऐनक, शैल। सामान्य रूप से हम बोलते हैं- केलास या कइलास बस यही प्राकृत भाषा है। इसी तरह एरावत या अइरावत, एनक या अइनक, सेल या सइल। बोलो - यौवन, बोलने में आएगा - योवन, यही प्राकृत है।

अभ्यास - 1

क- सर्वनाम शब्द (प्रथमा विभक्ति) - इमो (यह, इसने) (पुं. एक.), इमे (ये, इन्होंने) (पुं. बहु.)
सूचना - इम (यह) शब्द के यह रूप पुंलिंग में प्रथमा विभक्ति में हैं।

ख-संज्ञा शब्द- पुंलिंग में-केलास (कैलास पर्वत), एरावद (ऐरावत हाथी), सेल (शैल, चट्टान), एणग (चश्मा), नपुंसकलिंग में - जोव्वण (नपुं.) (यौवन), णाण (ज्ञान), सुह (सुख), दुक्ख (दु:ख), कज्ज (कार्य)।

ग - क्रियापद - पसंस (प्रशंसा करना), इच्छ (इच्छा करना), सुण (सुनना), पुच्छ (पूछना), कह (कहना), गिण्ह (ग्रहण करना), अच्च (पूजा करना), अस (है)।

घ -अव्यय पद- अज्ज (आज), कल्ल (कल), अवस्स (अवश्य), बहि (बाहर), अंत (भीतर)

व्याकरण

नियम-9- प्राकृत में अ: विसर्ग का लोप होकर उसके स्थान पर ओ या ए हो जाता है। जैसे- देव: - देवो, जिण:-जिणो, बाला:-बालाए, माला:-मालाए।

नियम 10 -संज्ञा शब्दों में जो शब्द ओकारान्त लिखे जाते हैं वे सभी पुंलिंग के जानना और जिन शब्दों में अनुस्वार रहता है जैसे जोव्वणं उन्हें नपुंसकलिंग के जानना।

प्राकृत में व्यंजनों की संख्या 29 है-

क वर्ग -क, ख, ग, घ **च वर्ग** - च, छ, ज, झ **ट वर्ग**- ट, ठ, ड, ढ, ण
त वर्ग - त, थ, द, ध, न **प वर्ग** - प, फ, ब, भ, म **अन्तस्थ** -य, र, ल, व
ऊष्माक्षर - स, ह

हस क्रिया के रूप एक साथ देखें- रूप सं. (29) आदि।

तीनों पुरुषों के रूप एक साथ देखें-

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
अन्य पुरुष	सो (पुं.) सा (स्त्री.) तं (नपुं.)	ते (पुं.), ताओ (स्त्री.), ताणि (नपुं.)
मध्यम पुरुष	तुमं	तुम्हे
उत्तम पुरुष	अहं	अम्हे

नियम 11 -'अस' क्रियापद से एकवचन में 'अत्थि' और बहुवचन में 'संति' रूप होता है, यह स्मरण में रखें।

नियम 12 - अव्ययों के रूप नहीं चलते हैं।

नियम 13 -कहीं संज्ञा का विशेषण सर्वनाम शब्द बनते हैं। जैसे- ये बालक, वे फल आदि। इसमें संज्ञा शब्द बालक, फल हैं। सर्वनाम ये, वे हैं। इन सर्वनामों की विभक्ति, लिंग, वचन संज्ञा के अनुसार चलती हैं।

नियम 14-कहीं संज्ञा के बिना सर्वनाम शब्द ही कर्ता में प्रयुक्त होते हैं।

अभ्यास - 1

1. **प्रयोग देखें** - (1) यह कैलाश पर्वत है- इमो केलासो अत्थि (नि. 11)। (2) ये देव हैं- इमे देवा संति (नि.11, 12)। (3) ये यौवन की प्रशंसा करते हैं- इमे जोव्वणं पसंसंति (नि. 14)। (4) यह मनुष्य शास्त्र पढ़ता है- इमो णरो सत्थं पढइ (नि. 13)। (5) यह चश्मा है- इमो एणगो अत्थि। (6) वे सब मनुष्य हैं- ते णरा संति (नि. 13, 11)।

2. **(क)** **अभ्यास करें**- (1) यहाँ चट्टान है। (2) वह विद्यालय है। (3) यह ऐरावत हाथी है। (4) वह देव है, (5) तू मित्र है।

   (ख) (1) वे सब पूजा करते हैं। (2) ये सब मनुष्य हैं। (3) वे सब देव हैं। (4) वे दोनों जिन हैं। (5) ये दोनों वीर हैं।

   (ग) (1) देव मित्र की प्रशंसा करता है। (2) बालक आज जिन की पूजा करता है। (3) मित्र चश्मा ग्रहण करता है। (4) वह आज फल की इच्छा करता है।

   (घ) (1) वे सब शास्त्र सुनते हैं। (2) वे सब बाहर नाचती हैं। (3) वे दोनों अवश्य पूछती हैं। (4) ये हाथी सदा कमल ग्रहण करते हैं।

3.

अशुद्ध वाक्य	**शुद्ध वाक्य**	**नियम**
1. इमो बालओ **संति**।	इमो बालओ अत्थि।	11
2. देवो अज्ज **सत्थ पुच्छंति**।	देवो अज्ज सत्थं पुच्छदि।	1,3
3. **ताओ** बालआ संति	ते बालआ संति।	13
4. **इमे** णरो **हसंति**।	इमो णरो हसइ।	13
5. इमे **पुच्छइ**।	इमे पुच्छंति।	14

4. **शुद्ध करो तथा नियम बताओ–**

   तं एरावदो अत्थि। सो बाला **संति**। अम्हे सत्थाणि **सुणंति**। तुम्हे मित्ताणि **पुच्छंति**।

5. **गृह कार्य–**

   2 (क) के वाक्यों को बहुवचन में बनाओ

   2 (ख) के वाक्यों को एकवचन में बनाओ

- अभ्यास 4(ग) के क्रियापदों के पूरे रूप लिखो।

अभ्यास - 2

(क) **सर्वनाम शब्द** - प्रथमा विभक्ति (स्त्री.) - इमा (यह) (एक.), इमाओ (ये दोनों, ये सब, ये) (बहु.)

सूचना - इम (यह) के ये रूप प्रथमा विभक्ति में स्त्रीलिंग में हैं।

(ख) **संज्ञा शब्द** - (इ एवं ईकारान्त पुं.) - हत्थि (हाथी), सुहि (सुधी, बुद्धिमान), पाणि (प्राणी), कवि (कवि), णाणि (ज्ञानी), सामि (स्वामी), गामणी (ग्रामणी)।

(ग) **क्रिया पद** - हरिस (प्रसन्न होना), थक्क (थकना), उल्लस (खुश होना), रूव (रोना), डर (डरना), पसर (फैलना), उट्ठ (उठना)।

(घ) **अव्यय पद**- पातो (प्रात:), अईव (अधिक), अप्पं (थोड़ा), सम्मं (अच्छी तरह), कधं (क्यों, कैसे)

व्याकरण

इकारान्त शब्दों के प्रथमा, द्वितीया विभक्ति में रूप इस प्रकार बनेंगे–

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा वि.	हत्थी, गामणी	हत्थिणो, गामणिणो
द्वितीया वि.	हत्थि गामणिं	हत्थिणो, गामणिणो

सूचना-1. इसी प्रकार सुहि आदि शब्दों के रूप बनेंगे।

2. इस अभ्यास में जो क्रियापद (ग) दिए हैं, वे सभी अकर्मक क्रियाएँ हैं।

नियम 15- जो वस्तु या व्यक्ति के संबंध में कुछ बतलाए वह क्रिया कहलाती है। क्रियाएँ दो प्रकार की होती हैं-1. **सकर्मक क्रिया**-जिसमें क्रिया का प्रभाव कर्म पर पड़े या जिसमें किसका, किसकी, किस ओर लगाने पर कर्म का ज्ञान या अपेक्षा होवे वह सकर्मक क्रिया है। जैसे– वह पूजा करता है, इस वाक्य में पूजा करना, इस क्रिया में किसका, किसकी शब्द लगाकर पूछने पर कर्म की अपेक्षा ज्ञात होती है इसलिए यह सकर्मक क्रिया है। **2. अकर्मक क्रिया**- जिसमें क्रिया का प्रभाव कर्ता पर पड़े या किसकी, किसका इन प्रश्नों की अपेक्षा न रहे वह अकर्मक क्रिया है। जैसे वह प्रसन्न होता है। यहाँ प्रसन्न होने का प्रभाव 'वह' कर्ता पर है, किसका, किसकी अपेक्षा नहीं है इसलिए अकर्मक क्रिया है। सकर्मक क्रिया के साथ कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है।

नियम 16 - इस अभ्यास में दिए गए स्त्रीलिंग के सर्वनाम शब्दों के साथ स्त्रीलिंग के ही संज्ञा शब्द प्रयुक्त होंगे।

अभ्यास - 2

1. प्रयोग देखें-

(1) यह प्रातः रोती है– इमा पातो रूवइ। (1) ये सब प्रसन्न होती हैं– इमाओ हरिसंति। (3) वहाँ हाथी है– तत्थ हत्थी अत्थि। (4) कवि ज्ञानी को प्रणाम करता है–कवी णाणिं पणमइ। (5) यह प्राणी अच्छी तरह पढ़ता है-इमो पाणी सम्मं पढइ।

2. अभ्यास करें-

(क) (1) वह सोती है। (2) हाथी थकता है। (3) कवि प्रसन्न होता है। (4) ज्ञानी अच्छी तरह पूजा करता है। (5) बुद्धिमान प्रातः उठता है।

(ख) (1) ये सब रो रही हैं। (2) ये क्यों डरती हैं। (3) बुद्धिमान हर्षित होते हैं। (4) कवि कहाँ जाते हैं। (5) ज्ञानी अधिक नहीं घूमते हैं। (6) प्राणी घर जा रहे हैं। (7) इस समय ये बालिकाएँ क्यों नाचती हैं। (8) वे दोनों प्रातः उठती हैं।

3.

अशुद्ध वाक्य	**शुद्ध वाक्य**	**नियम**
1. **कवि** णाणिं पणमइ।	कवी णाणिं पणमइ।	3
2. **इमा** बालाओ णच्चंति।	इमाओ बालाओ णच्चंति।	13,16
3. सा **अप्पा** डरइ।	सा अप्पं डरइ।	12
4. **इमाओ** हसइ।	इमा हसइ।	14
5. **पाणि हत्थी** जयइ।	पाणी हत्थि जयइ।	3

4. शुद्ध करो तथा नियम बताओ-

सामि थक्कइ। ते **रूवइ**। इमाओ **लआ** ण संति। इमा सोहा **संति**। हत्थिणो **अईवो थक्कइ**।

5. गृह कार्य-

अभ्यास 2 (क) के वाक्यों को बहुवचन में बनाएँ।

2 (ख) के वाक्यों को एकवचन में बनाएँ।

अकर्मक क्रिया और सकर्मक क्रियाएँ पिछले अभ्यास से छाँटें।

इस अभ्यास में दिए गए इकारान्त के सभी शब्दों के रूप दोनों विभक्ति में लिखें।

अभ्यास - 3

(क) **सर्वनाम शब्द** - (प्रथमा विभक्ति) (नपुं.)-इमं (यह) (एक.), इमाणि (ये) (बहु.), तं (वह) (एक.), ताणि (वे दोनों, वे सब) (बहु.)

(ख) **संज्ञा शब्द** - (उकारान्त पुं.) - सिसु (शिशु, बच्चा), साहु (साधु), गुरु (गुरु), रिउ (शत्रु), पिउ (पिता), तरु (वृक्ष)

(ग) **क्रिया पद** - दा (देना), ठा (ठहरना), ण्हा (नहाना), णे (ले जाना), हो (होना)

(घ) **अव्यय पद**- झत्ति (शीघ्र), अग्गओ (आगे), मा (नहीं, मत)

व्याकरण

उकारान्त शब्दों के प्रथमा,एवं द्वितीया विभक्ति के रूप-

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा वि.	सिसू	सिसुणो
द्वितीया वि.	सिसुं	सिसुणो

सूचना-1. साहु से लेकर तरु तक इसी प्रकार रूप चलेंगे। प्रथमा वि. के एकवचन में इ या उ दीर्घ होते हैं। 2. इस अभ्यास में आकारान्त, एकारान्त एवं उकारान्त क्रिया पद दिए हैं, इनके रूप इस प्रकार होंगे-

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
अन्य पुरुष	दाइ, णेइ, होइ	दंति, णेंति, होंति
मध्यम पुरुष	दासि, णेसि, होसि	दाह, णेह, होह
उत्तम पुरुष	दामि, णेमि, होमि	दामो, णेमो, होमो

सूचना-3 आकारान्त क्रिया में अन्य पुरुष का बहुवचन दा + न्ति से 'दान्ति' बना। प्राकृत व्याकरण के नियम से संयुक्त व्यंजन से पहले यदि दीर्घ स्वर हो तो वह हस्व हो जाता है, इसलिए 'दंति' बना। अन्य सभी रूप सामान्य हैं।

नियम 17 - प्राकृत वर्णमाला में ङ् एवं ञ् का स्वतन्त्र प्रयोग नहीं होता है। ये व्यंजन अपने वर्ग के व्यंजनों के साथ अनुस्वार (ं) के रूप में प्रयुक्त होते हैं। जैसे- जङ्घा का प्राकृत में जंघा, वाञ्छा-वंछा, पङ्क-पंक, मञ्च-मंच, शङ्का-संका।

प्राकृत में 'श' एवं 'ष' के स्थान पर 'स' का ही प्रयोग होता है। जैसे-सुरेश-सुरेस, मनीष-मनीस, आशीष-आसीस।

नियम 18 -इस अभ्यास में दिए गए नपुं. के सर्वनाम के साथ नपुं. के ही संज्ञा शब्द प्रयुक्त होंगे।

अभ्यास - 3

1. प्रयोग देखें-

(1) यह फूल है– इमं पुप्फं अत्थि। (2) वह नगर है– तं णयरं अत्थि। (3) यहाँ खेत है– अत्थ खेत्तं अत्थि। (4) वे सब शास्त्र हैं– ताणि सत्थाणि संति। (5) वे मनुष्य शास्त्र पढ़ते हैं– ते णरा सत्थाणि पढंति। (6) बच्चे नहाते हैं–सिसुणो ण्हंति। (7) गुरु आगे ले जाते हैं– गुरुणो अग्गओ णेंति।

2. अभ्यास करें-

(क) (1) वह फल है। (2) वे दोनों कमल हैं। (3) वहाँ घर है। (4) वह पुस्तक है।

(ख) (1) ये सब पुस्तकें हैं। (2) वे सब स्नान करते हैं। (3) वे बच्चे नहाते हैं। (4) पिता प्रतिदिन शीघ्र जागते हैं। (5) ये गुरु पूछते हैं। (6) वे दोनों नाचते हैं। (7) इस समय ये क्या देते हैं।

3.	**अशुद्ध वाक्य**	**शुद्ध वाक्य**	**नियम**
	1. **सिसु** गच्छइ।	सिसू गच्छइ।	3
	2. गुरू किं **दासि**।	गुरू किं दाइ।	1
	3. **तरू** झत्ति पसरंति।	तरुणो झत्ति पसरंति।	1
	4. **ताणि** गुरुणो संति।	ते गुरुणो संति।	13

4. शुद्ध करो तथा नियम बताओ-

इमाणि सिसुणो संति। **पोत्थओ** अत्थि। ताणि अग्गओ **गच्छइ**। ते **रिऊ ठांति**।

5. गृह कार्य-

- अभ्यास 2 (क) के वाक्यों को बहुवचन में बनाएँ।
- अभ्यास 2 (ख) के वाक्यों को एकवचन में बनाएँ।
- इस अभ्यास में दिए सभी क्रियाओं के रूप लिखें।

अभ्यास - 4

(क) **सर्वनाम शब्द** - द्वितीया विभक्ति - तं (उसको) (पुं.), ते (उन सबको, उन दोनों को), ममं (मुझको), अम्हे (हम सबको या हम दोनों को), तुमं (तुमको), तुम्हे (तुम सबको, तुम दोनों को)

(ख) **संज्ञा शब्द** - (इ, उकारान्त नपुं.) - वारि (जल), वत्थु (वस्तु), दहि (दही), अंसु (आंसू)।

(ग) **क्रिया पद** - भुंज (भोजन), खाद (खाना), उवदिस (उपदेश देना), खम (क्षमा करना)

व्याकरण

सर्वनाम शब्दों के द्वितीया विभक्ति में तीनों लिंगों में रूप इस प्रकार होंगे–

लिंग	एकवचन	अर्थ	बहुवचन	अर्थ
(पुं.)	तं	उसको	ते	उन सबको, उन दोनों को
(स्त्री.)	तं	उसको	ताओ	उन सबको, उन दोनों को
(नपुं.)	तं	उसको	ताणि	उन सबको, उन दोनों को
(पुं.)	इमं	इसको	इमे	इन सबको, इन दोनों को
(स्त्री.)	इमं	इसको	इमाओ	इन सबको, इन दोनों को
(नपुं.)	इमं	इसको	इमाणि	इन सबको, इन दोनों को
	ममं	मुझको	अम्हे	हम सबको, हम दोनों को
	तुमं	तुमको	तुम्हे	तुम सबको, तुम दोनों को

संज्ञा शब्दों के रूप–

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा वि.	वारिं, वत्थुं	वारीणि, वत्थूणि
द्वितीया वि.	वारिं, वत्थुं	वारीणि, वत्थूणि

नियम 19 - जो कर्ता को अभीष्ट हो और क्रिया जिसे चाहे वह शब्द कर्म होता है। कर्म की पहचान के लिए देखें नियम 15. द्वितीया विभक्ति 'को' से पहचानी जाती है।

नियम 20 -'विणा' के साथ द्वितीया विभक्ति लगती है।

नियम 21- ण + अत्थि - णत्थि (नहीं है)

नियम 22 -द्वितीया विभक्ति के बहुवचन में पुंलिंग शब्दों के अन्त में 'ए' प्रत्यय लगाकर भी रूप बनता है। शास्त्रों में यही प्रयोग बहुतकर मिलता है। अभ्यास 1 में दोनों रूप दिखाए हैं-जिणा या जिणे।

अभ्यास - 4

1. प्रयोग देखें-

(क) (1) वह मुझको नमन करती है– सा ममं णमइ। (2) वे सब तुमको देखते हैं-ते तुमं पासंति। (3) हम सब इन सबको क्षमा करते हैं-अम्हे इमे (इमाओ, इमाणि) खमामो। (4) वे दोनों उसकी (स्त्री.) प्रशंसा करते हैं-ते तं पसंसंति।

(ख) (1) साधु स्वामी को उपदेश देता है-साहू सामिं उवदिसइ। (2) मनुष्य दही खाते हैं-णरा दहिं खादंति। (3) वे सब उन दोनों बालिकाओं को देखते हैं- ते ताओ बालाओ पासंति। (4) हम सब उन शत्रुओं को जीतते हैं-अम्हे ते रिउणो जयामो (नियम 13,1)। (5) शिशु वस्तुओं को जानता है-सिसू वत्थूणि जाणइ। (6) धर्म के बिना सुख नहीं है-धम्मं विणा सुहं णत्थि।

2. अभ्यास करें-

(क) (1) वह क्षमा को ग्रहण करती है। (2) विद्या कथा कहती है। (3) वह मुझको उपदेश देती है। (4) वह उनकी इच्छा करता है। (5) पिता उन दोनों को क्षमा करता है।

(ख) (1) ये सब उन दोनों को नमन करते हैं। (2) कवि दही नहीं खाते हैं। (3) वृक्ष हम सबको क्षमा करते हैं। (4) सुधी अच्छी तरह तुम सबको जानते हैं। (5) वे इस बाला को उपदेश देते हैं।

3.

अशुद्ध वाक्य	**शुद्ध वाक्य**	**नियम**
1. सो **मम पस्संति**।	सो ममं पस्सइ।	1
2. इमाओ अम्हे **जाणइ**।	इमाओ अम्हे जाणंति।	1
3. **धम्मो** विणा किं कीरइ।	धम्मं विणा किं कीरइ।	20
4. ते **दही** खादंति।	ते दहिं खादंति।	3

4. शुद्ध करो तथा नियम बताओ-

वारि अत्थि। **वारिणो** संति। ताणि वत्थूणि **अत्थि**। सा **तुम्ह पस्संति**।

5. गृह कार्य-

- अभ्यास 2 (क) के वाक्यों को बहुवचन में बनाएँ।
- अभ्यास 2 (ख) के वाक्यों को एकवचन में बनाएँ।
- इस अभ्यास में दिए संज्ञा शब्दों के रूप बनाएँ।

कर्ता सारिणी - 1
(प्रथम पुरुष)

क्र.सं.	कर्ता नाम	अर्थ	पुरुष	वचन	लिंग
1.	सो	वह	प्रथम	एकवचन	पुल्लिंग
2.	सा	वह	प्रथम	एकवचन	स्त्रीलिंग
3.	तं	वह	प्रथम	एकवचन	नपुंसकलिंग
4.	ते	वे दोनों/वे सब	प्रथम	बहुवचन	पुल्लिंग
5.	ता/ताओ	वे दोनों/वे सब	प्रथम	बहुवचन	स्त्रीलिंग
6.	ताणि	वे सब	प्रथम	बहुवचन	नपुंसकलिंग
7.	बालओ	बालक	प्रथम	एकवचन	पुल्लिंग
8.	बालगा	बहुत से बालक	प्रथम	बहुवचन	पुल्लिंग
9.	बाला	बालिका	प्रथम	एकवचन	स्त्रीलिंग
10.	बालाओ	बहुत सी बालिका	प्रथम	बहुवचन	स्त्रीलिंग
11.	पोत्थअं	एक पुस्तक	प्रथम	एकवचन	नपुंसकलिंग
12.	पोत्थआणि	बहुत सी पुस्तकें	प्रथम	बहुवचन	नपुंसकलिंग
13.	इमो	यह/इसने	प्रथम	एकवचन	पुल्लिंग
14.	इमा	यह	प्रथम	एकवचन	स्त्रीलिंग
15.	इमं	यह	प्रथम	एकवचन	नपुंसकलिंग
16.	इमे	ये/इन्होंने	प्रथम	बहुवचन	पुल्लिंग
17.	इमाओ	ये दोनों/ये सब	प्रथम	बहुवचन	स्त्रीलिंग
18.	इमाणि	ये	प्रथम	बहुवचन	नपुंसकलिंग

कर्ता सारिणी - 2
(मध्यम पुरुष)

क्र.सं.	कर्ता नाम	अर्थ	पुरुष	वचन
1.	तुमं	तुम / तू	मध्यम	एकवचन
2.	तुम्हे	तुम दोनों/तुम सब	मध्यम	बहुवचन

कर्ता सारिणी - 3
(उत्तम पुरुष)

क्र.सं.	कर्ता नाम	अर्थ	पुरुष	वचन
1.	अहं	मैं	उत्तम	एकवचन
2.	अम्हे	हम दोनों/हम सब	उत्तम	बहुवचन

क्रियापद सारिणी - 1
(लट् लकार, प्रथम पुरुष)

उदाहरण - हस+दि/इ जुड़कर हसदि/हसइ प्रथमपुरुष एकवचन में बनता है।
हस+न्ति जुड़कर हसंति प्रथमपुरुष बहुवचन में बनता है।
इसी प्रकार निम्न क्रियाओं के रूप भी प्रथमपुरुष एकवचन एवं बहुवचन में बनते हैं।

क्र.सं.	धातु नाम	अर्थ	एकवचन	बहुवचन
1.	पसंस	प्रशंसा करना	पसंसदि/पसंसइ	पसंसंति
2.	इच्छ	इच्छा करना	इच्छदि/इच्छइ	इच्छंति
3.	सुण	सुनना	सुणदि/सुणइ	सुणंति
4.	पुच्छ	पूछना	पुच्छदि/पुच्छइ	पुच्छंति
5.	कह	कहना	कहदि/कहइ	कहंति
6.	गिण्ह	ग्रहण करना	गिण्हदि/गिण्हद	गिण्हंति
7.	अच्च	पूजा करना	अच्चदि/अच्चइ	अच्चंति
8.	अस	है	असदि/असइ	असंति
9.	हरिस	प्रसन्न होना	हरिसदि/हरिसइ	हरिसंति
10.	थक्क	थकना	थक्कदि/थक्कइ	थक्कंति
11.	उल्लस	खुश होना	उल्लसदि/उल्लसइ	उल्लसंति
12.	रूव	रोना	रुवदि/रुवइ	रुवंति
13.	डर	डरना	डरदि/डरइ	डरंति
14.	पसर	फैलना	पसरदि/पसउइ	पसरंति
15.	उट्ठ	उठना	उट्ठदि/उट्ठइ	उट्ठंति
16.	दा	देना	दादि/दाइ	दंति
17.	ण्हा	नहाना	ण्हादि/ण्हाइ	ण्हंति
18.	णे	ले जाना	णेदि/णेइ	णेंति
19.	भुंज	भोजन	भुंजदि/भुंजइ	भुंजंति
20.	खाद	खाना	खाददि/खादइ	खादंति
21.	उवदिस	उपदेश देना	उवदिसदि/उवदिसइ	उवदिसंति
22.	खम	क्षमा करना	खमदि/खमइ	खमंति

क्रियापद सारिणी - 2
(लट् लकार मध्यम पुरुष)

उदाहरण - जैसे हस+सि जुड़कर हससि मध्यमपुरुष एकवचन में बनता है।
हस+ह जुड़कर हसह मध्यमपुरुष बहुवचन में बनता है।
इसी प्रकार निम्न क्रियाओं के रूप भी मध्यमपुरुष एकवचन एवं बहुवचन में बनते हैं।

क्र.सं.	धातु नाम	अर्थ	एकवचन	बहुवचन
1.	पसंस	प्रशंसा करना	पसंससि	पसंसह
2.	इच्छ	इच्छा करना	इच्छसि	इच्छह
3.	सुण	सुनना	सुणसि	सुणह
4.	पुच्छ	पूछना	पुच्छसि	पुच्छह
5.	कह	कहना	कहसि	कहह
6.	गिण्ह	ग्रहण करना	गिण्हसि	गिण्हह
7.	अच्च	पूजा करना	अच्चसि	अच्चह
8.	अस	है	अससि	असह
9.	हरिस	प्रसन्न होना	हरिससि	हरिसह
10.	थक्क	थकना	थक्कसि	थक्कह
11.	उल्लस	खुश होना	उल्लसि	उल्लह
12.	रूव	रोना	रुवसि	रुवह
13.	डर	डरना	डरसि	डरह
14.	पसर	फैलना	पसरसि	पसरह
15.	उट्ठ	उठना	उट्ठसि	उट्ठह
16.	दा	देना	दासि	दाह
17.	ण्हा	नहाना	ण्हासि	ण्हाह
18.	णे	ले जाना	णेसि	णेह
19.	भुंज	भोजन	भुंजसि	भुंजह
20.	खाद	खाना	खादसि	खादह
21.	उवदिस	उपदेश देना	उवदिससि	उवदिसह
22.	खम	क्षमा करना	खमसि	खमह

क्रियापद सारिणी - 3
(लट् लकार, उत्तम पुरुष)

उदाहरण - हस+आमि जुड़कर हसामि उत्तमपुरुष एकवचन में बनता है।
हस+आमो जुड़कर हसामो उत्तमपुरुष बहुवचन में बनता है।
इसी प्रकार निम्न क्रियाओं के रूप भी उत्तमपुरुष एकवचन एवं बहुवचन में बनते हैं।

क्र.सं.	धातु नाम	अर्थ	एकवचन	बहुवचन
1.	पसंस	प्रशंसा करना	पसंसामि	पसंसामो
2.	इच्छ	इच्छा करना	इच्छामि	इच्छामो
3.	सुण	सुनना	सुणामि	सुणामो
4.	पुच्छ	पूछना	पुच्छामि	पुच्छामो
5.	कह	कहना	कहामि	कहामो
6.	गिण्ह	ग्रहण करना	गिण्हामि	गिण्हामो
7.	अच्च	पूजा करना	अच्चामि	अच्चामो
8.	अस	है	असामि	असामो
9.	हरिस	प्रसन्न होना	हरिसामि	हरिसामो
10.	थक्क	थकना	थक्कामि	थक्कामो
11.	उल्लस	खुश होना	उल्लसामि	उल्लसामो
12.	रूव	रोना	रुवामि	रुवामो
13.	डर	डरना	डरामि	डरामो
14.	पसर	फैलना	पसरामि	पसरामो
15.	उट्ठ	उठना	उट्ठामि	उट्ठामो
16.	दा	देना	दामि	दामो
17.	ण्हा	नहाना	ण्हामि	ण्हामो
18.	णे	ले जाना	णेमि	णेमो
19.	भुंज	भोजन करना	भुंजामि	भुंजामो
20.	खाद	खाना	खादामि	खादामो
21.	उवदिस	उपदेश देना	उवदिसामि	उवदिसामो
22.	खम	क्षमा करना	खमामि	खमामो

शब्दरूप (संज्ञा एवं सर्वनाम)

1. जिण = जिन / जिनेन्द्र भगवान् (अकारान्त, पुंलिंग)

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	जिणो	जिणा
द्वितीया	जिणं	जिणा / जिणे
तृतीया	जिणेण	जिणेहिं
चतुर्थी	जिणस्स	जिणाण, जिणाणं
पंचमी	जिणत्तो	जिणाहिंतो
षष्ठी	जिणस्स	जिणाण, जिणाणं
सप्तमी	जिणे, जिणम्मि	जिणेसु
संबोधन	हे जिण	हे जिणा

2. मित्त = मित्र (अकारान्त, नपुंसकलिंग)

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	मित्तं	मित्ताणि
द्वितीया	मित्तं	मित्ताणि
तृतीया	मित्तेण	मित्तेहिं
चतुर्थी	मित्तस्स	मित्ताण, मित्ताणं
पंचमी	मित्तत्तो	मित्ताहिंतो
षष्ठी	मित्तस्स	मित्ताण, मित्ताणं
सप्तमी	मित्तम्मि, मित्ते	मित्तेसु
संबोधन	हे मित्त	हे मित्ताणि

3. बाला = बालिका (आकारान्त, स्त्रीलिंग)

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	बाला	बालाओ
द्वितीया	बालं	बालाओ
तृतीया	बालाए	बालाहिं
चतुर्थी	बालाअ	बालाण
पंचमी	बालत्तो	बालाहिंतो
षष्ठी	बालाअ	बालाण, बालाणं
सप्तमी	बालाए	बालासु
संबोधन	हे बाला	हे बालाओ

4. णाणि = ज्ञानी (इकारान्त, पुंलिंग)		
विभक्ति	**एकवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	णाणी	णाणिणो
द्वितीया	णाणिं	णाणिणो
तृतीया	णाणिणा	णाणीहिं
चतुर्थी	णाणिणो	णाणीण, णाणीणं
पंचमी	णाणित्तो	णाणीहिंतो
षष्ठी	णाणिणो	णाणीण, णाणीणं
सप्तमी	णाणिम्मि	णाणीसु
संबोधन	हे णाणी	हे णाणिणो
5. वारि = पानी (इकारान्त, नपुंसकलिंग)		
विभक्ति	**एकवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	वारि	वारीणि
द्वितीया	वारि	वारीणि
तृतीया	वारिणा	वारीहिं
चतुर्थी	वारिस्स	वारीण, वारीणं
पंचमी	वारित्तो	वारीहिंतो
षष्ठी	वारिस्स	वारीण, वारीणं
सप्तमी	वारिम्मि	वारीसु
संबोधन	हे वारि	हे वारीणि
6. जुवई = युवती (इकारान्त, स्त्रीलिंग)		
विभक्ति	**एकवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	जुवई	जुवईओ
द्वितीया	जुवइं	जुवईओ
तृतीया	जुवईए	जुवईहिं
चतुर्थी	जुवईओ	जुवईण/जुवईणं
पंचमी	जुवइत्तो	जुवईहिंतो
षष्ठी	जुवईओ	जुवईण/जुवईणं
सप्तमी	जुवईए	जुवईसु
संबोधन	जुवइ	जुवईओं

7. त = वह (पुंलिंग)

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सो	ते
द्वितीया	तं	ते
तृतीया	तेण	तेहि
चतुर्थी	तस्स	ताण/ताणं
पंचमी	ताओ	ताहिंतो
षष्ठी	तस्स	ताण/ताणं/तेसिं
सप्तमी	तम्मि	तेसु

8. त = वह (स्त्रीलिंग)

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा	ताओ
द्वितीया	तं	ताओ
तृतीया	ताए	ताहि
चतुर्थी	ताअ	ताण/ताणं
पंचमी	तत्तो	ताहिंतो
षष्ठी	ताअ	ताण/ताणं/तासिं
सप्तमी	ताए	तासु

9. त = वह (नपुंसकलिंग)

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	ते	ताणि
द्वितीया	तं	ताणि
तृतीया	तेण	तेहि
चतुर्थी	तस्स	ताण/ताणं
पंचमी	ताओ	ताहिंतो
षष्ठी	तस्स	ताण/ताणं
सप्तमी	तम्मि	तेसु

10. अहं = मैं (सर्वनाम)

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहं	अम्हे
द्वितीया	ममं	अम्हे
तृतीया	मए	अम्हेहि
चतुर्थी	मज्झ	अम्हाण / अम्हाणं
पंचमी	ममाओ	अम्हाहिंतो
षष्ठी	मज्झ	अम्हाण / अम्हाणं
सप्तमी	अम्हम्मि	अम्हेसु

11. तुमं = तुम (सर्वनाम)

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	तुमं	तुम्हे
द्वितीया	तुमं	तुम्हे
तृतीया	तुमए	तुम्हेहि
चतुर्थी	तुज्झ	तुम्हाण / तुम्हाणं
पंचमी	तुमाओ	तुम्हाहिंतो
षष्ठी	तुज्झ	तुम्हाण / तुम्हाणं
सप्तमी	तुम्हम्मि	तुम्हेसु

धम्मस्स मूलं खु दया-पवुत्ती, स धम्मिगो जो सु दयाहिदत्थो।
सव्वेसु तित्थेसु सुधम्मदाणे, विणा दयं सव्वणिरत्थयं तं।।
–अनासक्तमहायोगी 2/7

धर्म का मूल दया में प्रवृत्ति करना है।
वह धार्मिक है जो दया हृदय वाला है।
सभी तीर्थ में जाना और धर्म के लिए दान देना
यह सब कुछ बिना दया के निरर्थक है।।

क्रियापद रूप

1. हस = हँसना (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
अन्यपुरुष	हसइ	हसंति
मध्यमपुरुष	हससि	हसह
उत्तमपुरुष	हसामि	हसामो

2. हस = हँसना (भविष्यत्काल)

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
अन्यपुरुष	हसिहिइ	हसिहिंति
मध्यमपुरुष	हसिहिसि	हसिहिह
उत्तमपुरुष	हसिहिमि	हसिहिमो

3. हस = हँसना (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
अन्यपुरुष	हसीअ	हसीअ
मध्यमपुरुष	हसीअ	हसीअ
उत्तमपुरुष	हसीअ	हसीअ

4. ठा = ठहरना (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
अन्यपुरुष	ठाइ	ठंति
मध्यमपुरुष	ठासि	ठाह
उत्तमपुरुष	ठामि	ठामो

5. ठा = ठहरना (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
अन्यपुरुष	ठाहीअ	ठाहीअ
मध्यमपुरुष	ठाहीअ	ठाहीअ
उत्तमपुरुष	ठाहीअ	ठाहीअ

6. ठा = ठहरना (भविष्यत्काल)

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
अन्यपुरुष	ठाहिइ	ठाहिंति
मध्यमपुरुष	ठाहिमि	ठाहिह
उत्तमपुरुष	ठाहिमि	ठाहिमो

7. हो = होना (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
अन्यपुरुष	होइ	होंति
मध्यमपुरुष	होसि	होह
उत्तमपुरुष	होमि	होमो

8. हो = होना (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
अन्यपुरुष	होहीअ	होहीअ
मध्यमपुरुष	होहीअ	होहीअ
उत्तमपुरुष	होहीअ	होहीअ

9. हो = होना (भविष्यत्काल)

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
अन्यपुरुष	होहिइ	होहिंति
मध्यमपुरुष	होहिसि	होहिह
उत्तमपुरुष	होहिमि	होहिमो

संज्ञा शब्दज्ञान

1. इ, ई, उकारान्त पुंलिंग शब्द

हत्थि	–	हाथी
सुहि	–	सुधी, बुद्धिमान
पाणि	–	प्राणी
कवि	–	कवि
णाणि	–	ज्ञानी
सामि	–	स्वामी
अग्गि	–	अग्नि
दिव्वझुणी	–	दिव्यध्वनि
गामणी	–	ग्रामणी
सिसु	–	शिशु, बच्चा
साहु	–	साधु
गुरु	–	गुरु
रिउ	–	रिपु, शत्रु
पिउ	–	पिता
तरु	–	वृक्ष
सव्वण्णु	–	सर्वज्ञ

2. इकारान्त/उकारान्त नपुंसकलिंग शब्द

वारि	–	जल
दहि	–	दधि, दही
वत्थु	–	वस्तु
अंसु	–	आँसू

क्रियापद ज्ञान

क्रियापद (अकारान्त)

पाव (सक.)	–	प्राप्त करना
पणम (सक.)	–	प्रणाम करना
पसंस (सक.)	–	प्रशंसा
इच्छ (सक.)	–	इच्छा करना
सुण (सक.)	–	सुनना
पुच्छ (सक.)	–	पूछना
गिण्ह (सक.)	–	ग्रहण करना
अच्च (सक.)	–	पूजा करना
अस (अक.)	–	है, होना
हरिस (अक.)	–	प्रसन्न होना
थक्क (अक.)	–	थकना
उल्लस (अक.)	–	खुश होना
रूव (अक.)	–	रोना
डर (अक.)	–	डरना
पसर (अक.)	–	फैलना
उट्ठ (अक.)	–	उठना
भुंज (सक.)	–	खाना
उवदिस (सक.)	–	उपदेश देना
खम्म (सक.)	–	क्षमा करना
बोल्ल (सक.)	–	बोलना

क्रिया विशेषण

क्रिया विशेषण (कालवाचक क्रियाविशेषण अव्यय)

इयाणिं/इयाणि	=	इस समय
तयाणि/तयाणिं	=	उस समय
जइया	=	जब
कइया	=	कब
तइया	=	तब
जाव	=	जब तक
ताव	=	तब तक
काहे	=	कब
जं	=	जब
ता	=	तब
पुणो	=	फिर
एक्कसिअं/एकसि एगइया/एगया	=	एक समय में
कल्लिं	=	आने वाला कल/गया हुआ कल
सुवे	=	आगामी कल
पगे	=	प्रातः काल
अज्ज/अज्जं	=	आज
पायं	=	प्रभात
सायं	=	संध्या समय
पइदिणं	=	प्रतिदिन
णत्तं	=	रात के समय
दोसा	=	रात में

सुक्खफलणाम
(सूखे फलों के नाम)

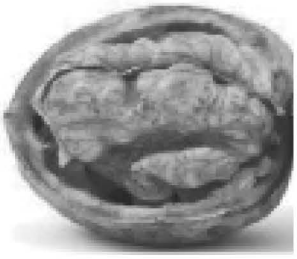		
अक्खोडं = अखरोट	वायादं = बादाम	मधुरिया = मुनक्का
काजवं = काजू	खज्जूरं = खजूर	पियालं = चिरोंजी
सुक्खदाख=किशमिश	अकोलं = पिस्ता	एला = इलायची

पुप्फणाम
(फूलों के नाम)

मालदी = चमेली (स्त्री.)	केदगी = केवड़ा (स्त्री.)	कण्णियार = कनेर (पु.)
चंपय = चंपा (पु.)	बउल=मौलिसिरी (नपु.)	मल्लिया=बेला (स्त्री.)
पाडल = गुलाब (नपु.)	कुद = कुन्द (नपु.)	कमल = कमल (नपु.)